ग्रन्थमाला ‘स्वभावदोष एवं अहं निर्मूलन’ : खण्ड ५

# स्वभावदोष-निर्मूलन हेतु आध्यात्मिक स्तरके प्रयास

स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया अर्थात
मनोलय एवं बुद्धिलय करनेका सुलभ साधन !

हिन्दी (Hindi)


संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक
**सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले**
भूतपूर्व सम्मोहन उपचार-विशेषज्ञ (वर्ष १९७८ से १९९४)

**सनातन संस्था**


**卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐**

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९६, गुजराती ६८, तेलुगु ५३, तमिल ४४, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

**जुलाई २०२४ तक ३६६ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९७ लाख २९ सहस्र प्रतियां !**

# ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

## सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्य का संक्षिप्त परिचय

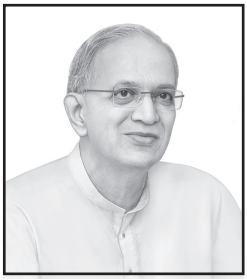

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २६.७.२०२४ तक १२८ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४० साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिंदुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र की (ईश्वरीय राज्य की) स्थापना का उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तर पर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसारार्थ 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्स की संसद में सम्मान (५ जून २०२४)

**(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)**

### सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले

१८.५.१९९६

# अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)


**अध्याय १: आध्यात्मिक स्तरपर किए जानेवाले प्रयास** ८

१. षड्रिपुओंपर नियन्त्रण रखनेका प्रयास करना ८

* षड्रिपुओंका स्वभावदोषोंसे सम्बन्ध ८

* षड्रिपुओंपर विजय पानेके लिए दैवीगुणोंके संवर्धनका महत्त्व ११

२. अहं-निर्मूलनके लिए प्रयास करना १४

* अहं-निर्मूलनका महत्त्व १४

* अहं-निर्मूलनके लिए किए जानेवाले कुछ प्रयत्न १६

३. नामजपमें संख्यात्मक एवं गुणात्मक वृद्धि करनेका प्रयत्न करना २१

४. निरन्तर 'सत्'में रहना ३२

५. क्षात्रवृत्ति धारण करनेके लिए प्रयत्नशील रहना ३५

६. अध्यात्म तथा विविध ग्रन्थों के सिद्धान्त, तत्त्व एवं नियमों के आचरणका प्रयत्न करना ४४

७. सन्तोंकी सीख आचरणमें लाना ५१

८. भक्तिभावमें वृद्धि करना ५३

**अध्याय २: व्यक्तिके मनकी स्थिति एवं नकारात्मक विचारोंसे लडने की क्षमतापर आध्यात्मिक गुणोंका होनेवाला परिणाम** ६४

१. मनकी सर्वसामान्य स्थिति ६४

२. क्षात्रवृत्ति जागृत रहे, तब मनकी स्थिति ६५

३. भाव जागृत रहे, तब मनकी स्थिति ६५

४. अहं जागृत न हो, तब मनकी स्थिति ६६

# भूमिका

'स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया' रज-तमसे बने स्वभावदोष दूर करने तथा अन्तर्मुखता बढाने में सहायक होती है । स्वभावदोषोंकी व्याप्तिका विचार करें, तो इन्हें सागरमें तैरनेवाले विशालकाय हिम-खण्डोंकी उपमा देना उचित होगा । जिस प्रकार हिम-खण्डका अधिकांश भाग सागरमें डूबा रहता है, उसी प्रकार स्वभावदोष अन्तःकरणकी गहराईमें बसे होते हैं । इन्हें शीघ्र दूर करनेके लिए स्वभावदोष बढानेमें कारण बने आध्यात्मिक घटक (जैसे - काम-क्रोधादि षड्रिपु, भय, 'मैं'पन (अहं) आदि) का उच्चाटन आवश्यक होता है । स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया अधिक अच्छे ढंगसे करनेमें आध्यात्मिक स्तरपर प्रयास किस प्रकार सहायक होते हैं, इस ग्रन्थमें इसका विस्तृत विश्लेषण किया गया है ।

यह ग्रन्थ पढकर अध्ययनशील पाठक स्वभावदोष-निर्मूलनकी गति बढाकर सच्चिदानन्दकी अनुभूति ले पाएं, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ।

**- संकलनकर्ता**

(सनातनकी ग्रन्थमाला 'स्वभावदोष-निर्मूलन'की संयुक्त भूमिका, 'स्वभावदोष (षड्रिपु)-निर्मूलनका महत्त्व व गुणसंवर्धन प्रक्रिया' ग्रंथमें दी है।)

**टिप्पणी :** ग्रन्थमें अनेक स्थानोंपर 'प.पू. डॉक्टर' अथवा 'प.पू. डॉ. आठवले', ऐसा उल्लेख ग्रन्थके संकलनकर्ताओंमेंसे 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी'के सन्दर्भमें है ।


**सनातनकी ग्रन्थसेवामें सम्मिलित होकर समष्टि साधना करें !**

'मराठी भाषाके ग्रन्थोंका संकलन करना; मराठी, हिन्दी एवं अंग्रेजी ग्रन्थोंका विविध भाषाओंमें भाषांतर करना एवं ग्रन्थोंकी संरचना 'इनडिजाइन' संगणकीय प्रणालीमें करना, ग्रन्थोंके मुखपृष्ठ बनाना एवं ग्रन्थछपाई सम्बन्धी करनी सेवाएं' इन कार्योंमें सम्मिलित होने हेतु सम्पर्क करें -

(0832) 2312334 अथवा ✉ sankalak.goa@gmail.com